जनजातीय क्षेत्र

भारत में सन् 1991 ई० की जनगणना के अनुसार कुल जनजातियों की जनसंख्या 667.6 लाख थी, जो देश की कुल जनसंख्या का 8.08% थी। जनजातियों की जनसंख्या का राज्यानुसार वितरण अत्यन्त असमान है। जहाँ सर्वाधिक जनजातीय जनसंख्या का प्रतिशत 94.8 मिजोरम का था, वहीं न्यूनतम 0.2% उत्तर प्रदेश और उत्तरांचल का था। 80% से अधिक जनजातीय जनसंख्या वाले राज्य मिजोरम के बाद मेघालय, नागालैण्ड, लक्षद्वीप, दादरा नगर हवेली आदि थे। सामान्यतया पूर्वोत्तर भारत और छत्तीसगढ़ एवं उड़ीसा में जनजातीय जनसंख्या का संकेन्द्रण मिलता है।

सामाजिक दृष्टि से सम्पूर्ण जनजातीय जनसंख्या 58 समूहों एवं 385 जातियों में विभाजित है। देश के 19 जिलों में कुल जनसंख्या का 50% से अधिक मिलता है। इनमें मध्य प्रदेश के धार, मांडला; छत्तीसगढ़ के सरगुजा एवं बस्तर; उड़ीसा में सुन्दरगढ़, मयूरभंज और कोरापुट; हिमाचल में लाहौल और स्पीति, किन्नौर; राजस्थान में डूंगरपुर और बांसवाड़ा; झारखण्ड में रांची; गुजरात में बलसाड़; अरुणाचल में कामेंग, लोहित एवं तिरप; असम में मिकिर हिल, उत्तरी कछार और मणिपुर में उत्तरी मणिपुर जिला सम्मिलित हैं। भारत के जनजातीय क्षेत्रों को तीन मैक्रो क्रम के प्रदेशों में विभाजित किया जा सकता है।

1. **उत्तरी क्षेत्र** – इस क्षेत्र के अन्तर्गत हिमाचल प्रदेश और पूर्वोत्तर भारत के राज्य सम्मिलित हैं।

2. **मध्यवर्ती क्षेत्र** – इसके अन्तर्गत उत्तरी मैदानी भाग से लेकर दक्षिण में कृष्णा नदी तक का क्षेत्र सम्मिलित हैं। विशेषकर उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान तथा उत्तरी आन्ध्र प्रदेश राज्य हैं।

3. **दक्षिणी क्षेत्र** – इसमें कृष्णा नदी के दक्षिण के क्षेत्र, दक्षिणी मध्यवर्ती आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु दक्षिणी–पश्चिमी महाराष्ट्र सम्मिलित हैं।

उपरोक्त क्षेत्रों के अतिरिक्त भारतीय द्वीप भी जनजातीय जनसंख्या के लिये उल्लेखनीय हैं। प्रो० वी०एस० गुहा ने मध्यवर्ती क्षेत्र में ही दक्षिणी–पश्चिमी क्षेत्र का एक अलग प्रादेशीकरण किया है जिसमें राजस्थान और गुजरात सम्मिलित हैं। मानचित्र के अनुसार पूर्वोत्तर भारत, झारखण्ड, उड़ीसा, छत्तीसगढ़ दक्षिणी पूर्वी राजस्थान और दक्षिणी गुजरात जनजातीय जनसंख्या के संकेन्द्रण के मुख्य क्षेत्र हैं।

Scanned with OKEN Scanner

तालिका 10.4
जनजातियों का क्षेत्रीय वितरण

राज्य	जनजातियाँ
असम, अरूणाचल	गारो, डफला, अंगामी, नागा, लुशाई, कूकी, रकसी, सेनानागा
नागालैण्ड, मिजोरम, मणिपुर	मिकिर, गालोंग, चांगनागा, अबोर, खमटी, लहोटानागा
मेघालय	आका, भिरी, कोनयाकनागा, कूकी, संथाल, लखेर
प० बंगाल, बिहार, सिक्किम	पोलिया, मुण्डा, लेपचा, खरिया, ओरांव, मालेर, हो
झारखण्ड	विरहोर, तमरिया, संथाल, भूइयाँ, कोरवा, मालपहरिया, गालोंग, विरजा, महाली, असुर, पंताराम
उड़ीसा, तमिलनाडु और केरल	खोंड, गोंड, कोटा, लम्बाड़ी, जुआंग, सावरा, बड़गा कन्निकर, परजा, इरूला, चेंचू, सुमाली, मालापन्न पनियान, गड़ावा, टोडा
गुजरात	तूरी, टोडिया, भील, मियाना, डफर, पटेलिया
महाराष्ट्र, म० प्र०, छत्तीसगढ़	डुवाला, टोडिया, भील, कोली, कटकारी, पारधी, माड़िया, गोंड, मुरिया
आन्ध्र प्रदेश	भटरा, परजा, आड़ेवा, कोरवा, मालेर, डंडामी, कोया, कूरकू, कोल बैगा, भील, बरावा, राजगोंड, मटरा, पलियान, वेरूकला, वेदा, ध्रुव, गदावा, चेंचू, रेड्डी, कादर, सहरिया, लंवाड़ी
उत्तर प्रदेश	थारू, भूइयाँ, सहरिया, खासा, भोकसा, कोरवा, कोल, वियार, मांझी, चेरो, खप्वाड़, राजी, विड़कोल, भोटिया
राजस्थान	भील, गड़ांसिया, मेव, भिराट
हिमाचल, जम्मू कश्मीर	किन्नर, गद्दी, लाहोली, स्पितियन, गुज्जर, बकरबाल, लद्दाखी

Scanned with OKEN Scanner

उपर्युक्त जातीय विविधताओं के सामाजिक तन्त्र का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि अनेक जातीय समूहों के रीतिरिवाज, धर्म–कर्म अलग–अलग हैं। भौगोलिक विषमता के अनुसार वे अपने पर्यावरण के साथ अर्न्तसम्बन्ध स्थापित करके अपना–अपना स्वतन्त्र सामाजिक–आर्थिक संगठन विकसित कर लिये हैं। प्रो० मजुमदार ने कुछ जातियों का सर्वेक्षण करके अर्थतन्त्र के अनुसार उनको निम्न प्रकार से विभाजित किया है –

तालिका 10.5

निवास क्षेत्र	आखेट व भोजन एकत्रीकरण	झूम कृषि लकड़ी इकट्ठा करना	स्थाई कृषि, पशुपालन मुर्गी, सूअर पालन, आदि
उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल	राजी	कोरिया, सहरिया, भूइंया, शाखड़	थारू, मांझी, बिन्द, भोकसा, खासा, कोल
बिहार, झारखण्ड	खरिया, विरहोर	कोरवा, असुर	मुण्डा, हो, तमरिया, ओरांव
पं० बंगाल	कूकी	गारो, मालपहरिया	पोलिया, संथाल
असम	कूकी कोनयाकनागा	नागा, लखेर, गारो	खासी, मनीपुरी
मध्य प्रदेश	हिलमारिया	मुरिया, डंडामी, मारिया	
छत्तीसगढ़		गोंड	परजा, भटरा
तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश	कोया, रेड्डी, पलियान कादर	खोंड, गोंड, कुरूम्बा	बड़गा, कोटा, इरजा
उड़ीसा	जुवांग	सावरा, मदावन सबारा	परजा
महाराष्ट्र	–	–	भील, गोंड़

इस तरह स्पष्ट होता है कि विभिन्न जनजातियाँ अपने–अपने क्षेत्र में अलग–अलग व्यवसाय में लगी हैं। विशेषकर वहाँ उपलब्ध पर्यावरण के अनुसार लघुस्तर पर उनके सामाजिक–आर्थिक तन्त्र में पर्याप्त भिन्नता देखी जा सकती है।

जन–जातीय क्षेत्रों का संसाधन आधार एवं उपयोग

विभिन्न जनजातीय क्षेत्रों में संसाधन आधार और उनके उपयोग प्रतिरूप में क्षेत्रीय अन्तर मिलता है, क्योंकि विभिन्न प्रकार के संसाधन और उनकी आर्थिक

संभाव्यता का शोषण जनजातीय और गैर जनजातीय दोनों करते हैं। लेकिन वृहत स्तर पर औद्योगीकरण गैर जनजातीय लोगों के हाथों में है। विभिन्न क्षेत्रों के अनुसार इनका क्षेत्रीय विवरण निम्नवत् है –

1. **उत्तरी क्षेत्र** – इस क्षेत्र में संसाधन आधार के रूप में हिमालय पर्वतीय क्षेत्र की वन सम्पदा सीढ़ीदार खेत, तराई क्षेत्र के वन, कृषि भूमि महत्वपूर्ण हैं। इनका आर्थिक उपयोग क्षेत्रानुसार अलग–अलग है। जम्मू–कश्मीर में भेड़ पालन, सीढ़ीदार खेतों में कृषि, हिमाचल में पशुपालन, कृषि महत्वपूर्ण है, जबकि उत्तर प्रदेश व बिहार के तराई भागों में थारूओं द्वारा कृषि, मजदूरी, मुर्गी, बतख पालन परम्परागत व्यवसाय है। इन सबके विपरीत पूर्वोत्तर भारत में-पहाड़ी ढालों की उर्वर मिट्टी, घाटियों का समतल मैदान, अधिक वर्षा से जल की सुविधा, बागाती फसलों के लिये उपयुक्त वातावरण आदि संसाधन हैं। इसीलिये यहाँ भी लघु स्तर पर आर्थिक तन्त्र में भिन्नता है। मेघालय, अरुणाचल में कृषि, मुर्गीपालन, नागालैण्ड में आखेट, भोजन एकत्रीकरण, सीढ़ीदार कृषि, मिजोरम में झूम कृषि, आखेट, लकड़ी काटना, पशुपालन मुख्य व्यवसाय हैं।

2. **मध्यवर्ती जनजातीय क्षेत्र** – यहाँ विभिन्न क्षेत्रों के अनुसार संसाधन आधार और उनका उपयोग अलग– अलग है। लघुस्तर पर और अधिक सामाजिक आर्थिक विभिन्नता मिलती है। राजस्थान, गुजरात में पशुपालन, सीमित कृषि वहाँ की अल्प वर्षा, अनुर्वर मिट्टी के कारण विकसित है, जबकि मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में महत्वपूर्ण ऊर्जा संसाधन, खनिज संसाधन जैसे सतपुड़ा क्षेत्र में कोयला, मैंगनीज, और तांबा, छत्तीसगढ़ में बाक्साइट कोयला, लोहा, बस्तर में लोहा, मैंगनीज, बॉक्साइट और तांबा महत्त्वपूर्ण खनिज हैं। आर्थिक उपयोग के अनुसार वहाँ धात्विक और ऊर्जा सम्बन्धी उद्योग भिलाई, बिलासपुर, कोरबा, मशीनरी और खाद्य उद्योग, रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग में तथा जनजातीय क्षेत्रों में खनन उद्योग विकसित हैं, लेकिन जन–जातीय जनसंख्या से सम्बन्धित कार्यों में बुन्देलखण्ड में कृषि, पशुपालन और लकड़ी काटना और बेंचना, धार और सतपुड़ा क्षेत्र में पशुपालन, लकड़ी, कृषि, छत्तीसगढ़ में कृषि, लकड़ी, भोजन एकत्रीकरण पशुपालन अधिक विकसित है। इसी प्रकार झारखण्ड और पश्चिमी बंगाल में वन, खनिज और ऊर्जा स्रोत मुख्य संसाधन हैं। विकास की दृष्टि से जनजातीय क्षेत्रों के खनिजों पर आधारित लौह–इस्पात उद्योग बोकारो, दुर्गापुर, मशीन निर्माण रांची, धनबाद, वर्द्धमान, आसनसोल में विकसित है। लेकिन जनजातीय अर्थतन्त्र में मजदूरी, सीमित कृषि व पशुपालन, लकड़ी काटना और बेंचना, भोजन इकट्ठा करना, विभिन्न प्रकार की वनोपजों का विपणन आदि हैं। उड़ीसा में भी खनिज, वन तथा कृषि भूमि ही संसाधन है। इसीलिये बड़े पैमाने के उद्योगों के अतिरिक्त यहाँ भी लकड़ी काटना, बेचना, कृषि व पशुपालन उल्लेखनीय हैं।

Scanned with OKEN Scanner

3. दक्षिणी क्षेत्र – इस क्षेत्र में वन एवं कृषि मुख्य संसाधन हैं। व्यवसायगत विशिष्टता के अनुसार यहाँ जनजातियों में सीमित कृषि, लकड़ी काटना, पशुपालन महत्वपूर्ण है।

इस तरह स्पष्ट होता है कि मैक्रो स्तर की उक्त विभिन्नताओं के अतिरिक्त लघुस्तर (माइक्रो) पर जनजातीय अर्थतन्त्र में और अधिक विभिन्नतायें मिलती है। इसीलिये एक समान नियोजन नीति को लागू करके जनजातीय क्षेत्र का विकास नहीं किया जा सकता है। बल्कि विभिन्न क्षेत्रों के संसाधनों के अनुसार नियोजित अर्थतन्त्र विकसित करना आवश्यक है। हर क्षेत्र में उपलब्ध संसाधनों एवं पर्यावरण के अनुसार जनजातियों की प्राथमिकताओं का निर्धारण करके उन्हीं के आधार पर क्षेत्रीय नियोजन करना आवश्यक है, तभी इन क्षेत्रों का सन्तुलित विकास सम्भव हो सकेगा। वर्तमान समय में जनजातीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम देश के 19 राज्यों और दो केन्द्र शासित प्रदेशों में 50 प्रतिशत से अधिक जनजातीय जनसंख्या वाले जिलों में चलाया जा रहा है। आधारभूत रूप में जनजातीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम तीन स्तरीय रूपों में संचालित किया जाता है।

1. लघुस्तर (Micro level) पर जिसमें एक विकास खण्ड सम्मिलित रहता है।
2. मध्यम स्तर (Meso level) पर जिसमें प्रायः तहसील अथवा डिवीजन सम्मिलित रहता है।
3. वृहद्स्तर (Macro–level) पर जिसमें राज्य स्तर तक की इकाइयाँ आती हैं।

उक्त तीन स्तरों पर जनजातीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम जिला को आधार मानकर संचालित किया जाता है। भौगोलिक दृष्टि से अब तक जनजातीय क्षेत्र में आर्थिक विकास के जो कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं, उन्हें दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैं।

1. विशिष्ट नियोजन – इसके अन्तर्गत सार्वजनिक क्षेत्र के बड़े पैमाने के उद्योग तथा अन्य विकसित केन्द्र सम्मिलित किये जा सकते हैं। जिनका संचालन जनजातीय क्षेत्र के संसाधनों के आधार पर किया जा रहा है। ये केन्द्र वहाँ ध्रुवीकृत अर्थ तन्त्र के प्रतीक हैं। इनके चारों ओर इन केन्द्रों का कोई प्रसार प्रभाव नहीं है।

2. जनजातीय क्षेत्र का सामान्य नियोजन – इसमें जनजातियों की ाथमिकताओं के आधार पर आर्थिक विकास के कार्यक्रमों को लागू किया जा हाहै। जैसे पशुपालन, मुर्गी, सूअर पालन, शहद उत्पादन, रेशम उत्पादन, झूम ृषि को कम करना, वृक्षारोपण, कृषि वानिकी, हार्टिकल्चर का विकास आदि ार्थिक कार्यक्रमों के अतिरिक्त स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक कल्याण आदि कार्यक्रमों ा भी प्राथमिकता दी जा रही है। भौगोलिक दृष्टि से यदि विभिन्न विकास र्यक्रमों की समीक्षा की जाय तो यह स्पष्ट होता है कि जनजातीय क्षेत्रों में

Scanned with OKEN Scanner

जिला स्तर से ग्रामीण स्तर तक योजना निर्णय, निर्माण और संचालन की प्रक्रिया
में विकेन्द्रीकरण का अभाव है। जनजातियों की सहभागिता नहीं है। स्थानीय
स्तर पर ग्राम विकास अधिकारी या कोई प्रशासनिक अधिकारी अपने न्यस्त
कार्यों के कारण प्राथमिकता निर्धारण के अभाव में समान रूप से कार्यक्रमों को
लागू नहीं कर पाता है। चूँकि जनजातीय समूह अलग-अलग समूहों में विभिन्न
क्षेत्रों में बंटे हैं, इनका सामाजिक-आर्थिक तन्त्र उसी प्रकार अलग-अलग है,
अतएव जब तक इनके पर्यावरण और परम्परागत सामाजिक आर्थिक तन्त्र से
मिले-जुले कार्यक्रमों को नहीं लागू किया जायेगा, तब तक कोई भी विकासात्मक
कार्य सफल नहीं हो पायेगा।